मानस मर्मज्ञ बहन मंदाकिनी का बिदाई समारोह
माननीय राज्यपाल श्री राम नरेश यादव के उद्‌गार
स्थान:- राजभवन, भोपाल, दिनांक :- 18 अगस्त 2013,
समय :- शाम 5.30 बजे

मानस मर्मज्ञ बहन मन्दाकिनी जी का राजभवन आगमन पर, मैं आत्मीय अभिनंदन करता हूं। रामचरित मानस के माध्यम से मानव समाज को परमार्थ, शांति और विकास के मार्ग पर अग्रसर करने में, बहन मन्दाकिनी जी का अमूल्य योगदान है।

भारतवर्ष में ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व में रामचरित मानस की ख्याति है। रामचरित मानस तुलसीदास जी का ऐसा ग्रंथ है जिसकी प्रतिष्ठा सर्वव्यापी है। तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में, मानव जीवन की वास्तविकताओं पर आधारित समाज-व्यवस्था की कल्पना की है। इसके अनुसार प्रेम, मातृत्व, नैतिकता, करूणा, क्षमा,मर्यादा, शील, समानता आदि गुण, अलौकिक न होकर इसी लोक की बुनियादी आवश्यकताएं हैं। ये मनुष्यता की रक्षा के लिये जरूरी भी हैं। भारतीय लोकजीवन में नैतिक मूल्यों को बनाये रखने में रामचरित मानस की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस ग्रंथ में भारतीय मानस की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति हो सकी है। यह देश का लोकप्रिय काव्य है। इसमें मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम का जीवन चरित है।

राम चरित मानस में तुलसीदास जी ने श्रीराम के निर्माण एवं विशद चरित्र का वर्णन किया है। रचना को पढ़कर ऐसा लगता है कि श्री राम के चरित्र ने ही उन्हें वह वाणी प्रदान की है जिसके द्‌वारा वे सुंदर कृति का निर्माण कर सके। आज जब समाज में नैतिक मूल्यों का ह्‌यास, महिलाओं पर अत्याचार बढ़ रहा है और युवा वर्ग का धार्मिक और पारंपरिक सभ्यताओं और संस्कृति से दूर होता जा रहा है ऐसे में राम चरित मानस को जन-जन तक पंहुचाना अत्यावश्यक है। मैं बहन मंदाकनी को साधुवाद देता हूं जो अपने प्रवचनों से युवा वर्ग में रामचरित मानस की लोकप्रियता स्थापित करने का प्रयास कर रही हैं और उनका मार्गदर्शन कर रही हैं।

तुलसी दास जी की स्वयं की दृष्टि में भी रामायण का अर्थ है- कारण ब्राह्म का कार्य ब्राह्म में अयन या अनुप्रवेश। कारण ब्राह्म भी राम हैं और कार्य भी राम। इस प्रकार निर्गुण ब्राह्म को सगुण ब्राह्म में बदलने की दिव्य प्रक्रिया का नाम है- "रामायण"। तुलसीदास जी ने रामायण की रचना तन्यमता से की है।

मुझे, बहन मंदाकिनी जी के प्रवचनों से लाभान्वित होने के सुअवसर मिले हैं। इसके लिये मैं अत्यन्त अनुग्रहीत हूं। मैं आशा करता हूं कि बहन मंदाकिनी जीसदैव इसी प्रकार प्रदेशवासियों को मानव कल्याण के प्रवचन से लाभान्वित करेंगी।

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि बहन मन्दाकिनी जी इस वर्ष भी राजभवन पधारी हैं। मैं, एक बार पुन: बहन मंदाकिनी जी का शुद्ध अंत:करण से अभिनन्दन करता हूं।

जयहिन्द।